① उत्तर वैदिक कालीन सामाजिक जीवन

वर्ण व्यवस्था – ① समाज स्पष्ट रूप से चार वर्गों में विभक्त हो गया था ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य, और शुद्र

② (ii) ऋग्वेद के दसवें मंडल में अर्थात पुरुष सूक्त में यह कहा गया है कि ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य और शुद्र की उत्पत्ति ब्रह्मा के रचयिता प्रजापति से हुई थी

आदिकालीन मनुष्य का श्रेष्ठ है नामक श्लोक में यह बात कही गयी है कि जो ऋग्वेद के 10वें मंडल में है। उनके कर्मों का वर्णन इस प्रकार है

(a) **ब्राह्मण** – यह धर्म सम्बन्धि कार्यों का सम्पादन करता था और राजा को मंत्रणा देता था बदले में गरपुर दक्षिणा लेता था वह सिर्फ दान लेता था।

(b) **क्षत्रीय** – यह राज्यकार्य का संचालन करता था युद्ध लड़ता था दान देता भी था दान लेता भी था

(c) **वैश्य** यह कृषि व्यापार एवं पशुपालन का कार्य करता था यही वर्ग सिर्फ कर (टैक्स) देता था

* उपर्युक्त तीनों अर्थात ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य (द्विज) कहलाते थे क्योंकि ये जनऊ धारण करते थे और वेद पढ़ सकते थे

(d) **शुद्र** :— शुद्र का कार्य तीनों वर्णों की सेवा करना था उत्तर वैदिक काल के तीनों वर्ण अर्थात द्विजों एवं शुद्रों के बीच का यह भेद-भाव धीरे धीरे बढ़ता गया यह कहा जाने लगा की शुद्र को पवित्र अग्नि

के नजदीक जाने का अधिकार नहीं है अर्थात उसे यज्ञ करने का अधिकार नहीं है और नहीं उसे धार्मिक ग्रंथ पढ़ने का अधिकार है परन्तु प्रारम्भिक साहित्य में अनेक स्थानों पर उनके अधिकार स्वीकार किए गये हैं यही नहीं यह भी कहा गया है कि शूद्रों को अपना मुर्दा जलाने का अधिकार नहीं है लेकिन अनेक प्राचीन साहित्यों में उनके शव के समाधि के नाम तक दी गयी है ये सभी शुद्र के हिन भावना के द्योतक हैं यद्यपी इस समय तक एकदम हेयसमझे जाने वाली ऐसी कोई बात नहीं थी ऐसा की पिछे कहा जाने लगा।

* प्रारम्भ में कोई भी बालक अपना मनचाहा पेशा अपना सकता था लेकिन वे धिरे-धिरे वहीपेशा अपनाने लगे जो उनके पिता का था—

* ऋगवेद के पुरुष शुक्त में यह दिखलाया गया है कि ब्राह्मण ब्रह्मा के मुख से क्षत्रीय उनके बाजु से वैश्य उनके जांघ से और शुद्र उनके पांव से उत्पन्न हुए हैं इस प्रकार प्रतिकात्मक रूप से यह दिखाया गया है कि ब्राह्मण, क्षत्रीय वैश्य या शुद्र समाज के अंग हैं। हालांकि ये अंग समान स्तर के नहीं हैं ब्राह्मण की तुलना सिर या मुख से की गयी है जब की शुद्र की तुलना पांव से की गयी है। ब्राह्मण सर्वोच्च समझे गये क्योंकि ऐसा माना गया कि समाज का देवताओं से सम्पर्क केवल उनके द्वारा ही स्थापित हो सकता था जबकि शुद्र निम्न कार्य करता था और इस श्रेणी में वह दास भी रखे गये जो युद्ध में पकड़ जाते थे

* वर्ण व्यवस्था की अवधारणा — वर्ण व्यवस्था की अवधारणा की निम्न विशेषता है।

(क) जन्म के आधार पर सामाजिक स्तर
(ख) वर्णों का श्रेणी बद्ध तरीके से गठन (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य शुद्र) जिसमें ब्राह्मण समाज के सबसे उच्च और शुद्र सबसे निम्न स्थान पर थे
(ग) सगोत्र विवाह एव अनुवलोमों की पवित्रता के नियम

वर्ण व्यवस्था के आगे धर्म या सर्वभौमिक नियम की अवधारणा से प्रतिबद्ध किया गया है और वर्ण धर्म की स्थापना सामाजिक नियम रूप से इसलिए की गयी ताकि समाज को व्यवस्थित या संचालित किया जा सके

लेकिन उत्तर वैदिक समाज के वर्ण धर्म का पूर्णतः विकास नहीं हो पाया था इस समय समाज का विभाजन व्यवस्था के आधार पर था और समाज में काफी लचीलापन था जिससे किसी का व्यवसाय जन्म पर आधारित नहीं होता था

Scanned with CamScanner